Dr. Priti Ranjan
H. D Jain College (Ara)
B.A Part - I
paper - 1
Topic - Vaidik Sabhyata
Part - II

* तक्षशिला / मथुरा / राजघाट / अंतरंजीखेड़ा में उत्खनन उत्तर वैदिक कालीन वस्तुएँ मिले है।
मिट्टी के बर्तनों मिले है।

* हड़प्पा में सबसे ज्यादा मिट्टी बर्तन लाल / काला मिले है।
* ऋग्वेद में लाल (मृदभांड) की चर्चा है।
उ० वैदिक काल में चित्रित / धूसर रंग में।
P.G.W (उत्तर वैदिक काल)

* उत्तर वैदिक काल से कुछ बर्तन काले चमकार मिले है। (N.B.P.W) (Noth

* आर्यों का आर्थिक जीवन मुख्यतः पशुपालन पर निर्भर था। * ऋग्वेद में कृषि की जानकारी मिलती है।
24 बार कृषि का उल्लेख आया है।
यव :(जौ) को कहते थे।

* ऋग्वैदिक काल में सभी फसलों के लिए यव शब्द का प्रयोग किया गया।

* ऋग्वेद के सातवाँ मण्डल में विष्णु के द्वारा भूमि को उपजाऊ बनाकर लोगों में बाँटने का उल्लेख आया।

*

Ans
215 बार चर्चा है।
लेकिन आर्थिक जीवन में सर्वाधिक महत्व गाय पर डाला गया। * ऋग्वेद में गाय की चर्चा 176 बार आया है।
* ऋग्वेद में कुछ ऐसे शब्दवली है, जिसमें गाय के महत्व को स्थापित करता है।
= गाय (धनी व्यक्ति को कहते है)
जिसके पास सबसे ज्यादा गाय।
= गाय सम्बन्ध

गोहन ⇒ गाय (जो अतिथि को कहते हैं)
गोहनाग ⇒ अतिथि के स्वागत के लिए।
↳ अतिथि के लिए गाय माँस का प्रयोग किया जाता था।

* गाय को अघन्या भी कहा गया है, यानि गाय को मारने नहीं चाहिए।
*
⇒ गाय से उत्पन्न
* आर्य को भारत में आने से पहले भैंस से परिचित नहीं थे। वे लोग भैंस के लिए गौरी शब्द का उल्लेख किया।

* ऋग्वेद में राजा का कुलिप कर्तव्य गाय का खोज करना। तथा दूसरे कबिले से गाय के लिए लड़ाई करना।

* आर्य लोग किसी घरेलू पशु से अनभिज्ञ नहीं थे।
* गाय की खोज – (गविष्टि)

व्यापार / वाणिज्य
पन्की (व्यापारियों)
देश पन्की (वे व्यापारि जो बाहर जाकर व्यापार करते थे)
* ऋग्वेद में समुद्र का उल्लेख आया है।
" " नाव का " " "

* ऋग्वेद में निष्क (पाँचवाँ मंडल) का उल्लेख आया है, जिसे कुछ इतिहासकार सोना का सिक्का मानते हैं, लेकिन अधिकांश विद्वानों का राय है कि निष्क गला का ~~का~~ अभूषण था।
↳ most Imp

* आमतौर पर यह माना जाता है कि उस युग में भी वस्तु विनिमय चलता था। * वस्तु विनिमय का सबसे बड़ा माध्यम गाय था

* ऋग्वेद काल में कुछ उद्योग का उल्लेख मिलता है, कुम्हार के द्वारा चक्र पर बर्तन बनाना। (कुलाल - कुम्हार)

* लाल रंग की बर्तन बनाने की चर्चा है। वैसे ऋग्वेद में विभिन्न धातुओं का उल्लेख है। ऋग्वेद वाले तांबा का भी जानकारी रखते थे।
लोहा अयस तांबा का उल्लेख ( )
सोना (हिरण्या / सोना)

* लेकिन उत्खनन से कोई धातुओं की वस्तु नहीं मिली है, यहां तक मृद्भांड भी नहीं है।
* विभिन्न प्रकार के वस्तुएं का भी उल्लेख है।

अपवाद
ऋग्वेद में कपास का उल्लेख नहीं आया है। परन्तु रेशमी वस्त्र (तार्प्य) का उल्लेख आया है। किंही पर किंही ऊन वस्त्र का भी उल्लेख आता है।

* उत्तर वैदिक काल में आर्यों के आर्थिक जीवन में कुछ परिवर्तन आये हैं, क्योंकि उत्तर वैदिक काल में स्थायी जीवन शुरू होने लगा। उत्तर वैदिक अर्थ व्यवस्था कृषि पर आधारित था।

* आर्यों को लोहा का ज्ञान हो गया था। -100 BC- गंधार क्षेत्र में प्रथम प्रमाण (उत्तर प्रदेश के अंतरजीखेड़ा 800 BC के आस-पास लोहा के उपकरण सब मिल रहे हैं। और लोहा की जानकारी के कारण कृषि में सुविधा होने लगा।

* उत्तर वैदिक काल में अलग-2 फसलों के लिए अलग-नाम है:- गेहूँ / चावल
गेहूँ (गोधूम) और चावल के लिए (व्रीहि)
खव जौ के लिए (यव)
* उत्तर वैदिक काल से भूमि पर निजी अधिकार का सिद्धान्त आया, जबकि ऋग्वैदिक काल से निजी सम्पत्ति की चर्चा नहीं थी।

* कृषि के साथ-2 पशुपालन का महत्व और बढ़ गया (खासकर गाय और गाय के कारण)

* युद्ध में बड़ी संख्या में गाय और बैल मारे जाते थे। इसलिए
लोगों / बौद्ध धर्म का उद्भव होना लगा।

* कृषि में अतिरिक्त उत्पन्न होने लगे, इस कारण व्यापार / वाणिज्य का विकास होने लगा।

* उत्तर वैदिक काल में मृद्भांड उद्योग के अलावे धातु उद्योग का उल्लेख आया।

* उत्तर वैदिक काल में उत्खनन वैसे **200** स्थालों की खोज की गयी / अधिकार

लोहा के लिए (श्याम अयस / कृष्ण अयस) ताँबा से अलग करने के लिए।

* उत्तर वैदिक काल शतमान एवं नाम के चाँदी मुद्राएं का उल्लेख आया है।

* इतिहासकार D. D. कौशाम्बी सिक्के का प्रयोग 700 BC से प्रारम्भ मानते हैं।

* उत्तर वैदिक काल के अंतिम चरण में नागरीकरण का प्रमाण मिला है। अंतिम चरण बौद्ध काल।

* बौद्ध काल में => भारत में दूसरा नागरीय करण का प्रमाण मिला है।

वैदिक कालीन राजनीतिक जीवन :—

ऋग्वेद काल में स्थायी राज्य नहीं बना था (जनपद)

* ऋग्वेद में जनपद शब्द का उल्लेख एक बार भी नहीं है। लेकिन (जन - कबीला)। जन शब्द का उल्लेख **275** बार उल्लेख किया गया।

* प्रत्येक जन का एक मुखिया होता था, वही मुखिया - राजा कहलाता था।

* राजा प्राय: वंशानुगत था। लेकिन सैनिक योग्यता अनिवार्य थ राजा के पास सभी शक्तियाँ था। राजा का मुख्य कर्तव्य जन की रक्षा करना, इसलिए इसे (जनकोपाल) कहा गया।

* राजा का दूसरा मुख्य कर्तव्य = (गविष्टि)

* राजा का मुख्य रूप से कोई स्थायी Tax नहीं दिया जाता था, बल्कि उन्हें भेंट दिया जाता था, इसलिए उन्हें 'बलि' कहते थे।

* प्रशासनिक सुविधा के लिए राजा को एक पुरोहित नियुक्त की जाती थी, एक सेनापति था। राजा के को पाटमहारानी प्रधान रानी कहा जाता था। युवराज भी सलाहकार थे।

* ऋग्वेद में देशकने = गुप्तचर व्यवस्था से संबंधित।
* वाजपति = सामूहिक भूमि की देखभाल करना वाला।
* = न्याय व्यवस्था समझने वाला।
* राजा को सहायता देने के लिए समितियाँ भी बनायी जाती है।

* ऋग्वेद में तीन प्रकार के संगठन का उल्लेख है:—
✓ विदथ = सबसे बड़ी परिषद् होती थी। (जन के लोगों के लिए कोई भी सदस्य शामिल हो सकता था) विदथ का उल्लेख 122 बार आया है। विदथ के सत्र में राजा की उपस्थित अनिवार्य थी।

* समिति = समिति की चर्चा ऋग्वेद में 9 बार की गयी है। समिति में व्यस्क लोग शामिल ~~होती थी~~ होते थे। (महिला/पुरुष दोनों) समिति का मुख्य काम जन के लिए कानून बनाना।

वैन्मा

* (ii) सभा ⇒ सभा में मुख्यतः पुरोहित वर्ग की चर्चा की गयी, अन्य वर्ग के लोग भी आ सकते थे। न्याय संबंधित मामले का निपटारा होता था। (तीनों संस्थाओं में महिलाओं शामिल (राजा की उपस्थिति अनिवार्य थी) थी)
* 8 बार सभा का उल्लेख ऋग्वेद में हुआ।

* प्रशासनिक सुविधा के लिए जन को कोई भागों में बाँटा जाता था। जन के नीचे इकाई होती थी, उसे 'विश' कहा जाता था। विशपति के प्रधान - विशपति राजा के प्रति उत्तरदायी थे।

* विश को

* ग्राम का प्रधान को ग्रामीणी कहा जाता था। ग्राम से छोटी को कुल / परिवार कहा जाता था।

* ऋग्वेद में कुल शब्द की चर्चा नहीं है, लेकिन कुलप शब्द की चर्चा है (कुल का मुखिया)

- जन
- विश
- ग्राम
- कुल

Date 08/11/2021

उत्तर वैदिक समाज काल :- उत्तर वैदिक काल में समाज जाति प्रथा में बाँटा हुआ था। यानि जन्म के आधार पर व्यवसाय एवं प्रतिष्ठा का निर्धारण।

* ऋग्वेद के 1th और 10th मंडल की रचना उत्तर वैदिक काल में हुआ।
* 1th और 10th मंडल में 191 सूक्त दोनों में समान है।

* ऋग्वेद के 10th मंडल में एक पुरुष सूक्त है, उस सूक्त में प्रथम बार जाति प्रथा की चर्चा है।

* इस सूक्त में विवरण है, ब्रम्हा के चार अंग से जाति / वर्ण / का उद्भव हुआ। ब्रम्हा के मुँख से ब्रम्हमण, बाजू से क्षत्रिय पेट से वैश्य तथा पैर से शुद्र जाति का उल्लेख है।